

Dr. Kumari Priyanka

History department

H. D jain college, ara

Ug semester V

राष्ट्रकूट वंश का संक्षिप्त वर्णन करें।

भारत के इतिहास में राष्ट्रकूट वंश का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह वंश दक्षिण भारत का एक शक्तिशाली राजवंश था, जिसने 8वीं से 10वीं शताब्दी तक दक्कन क्षेत्र से लेकर उत्तर भारत तक अपने प्रभाव का विस्तार किया। इस वंश ने न केवल राजनीतिक दृष्टि से, बल्कि कला, साहित्य और धर्म के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान दिया।

◆ उत्पत्ति एवं स्थापना

राष्ट्रकूटों की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों में मतभेद है। कुछ इतिहासकार इन्हें कन्नड़ जाति से, तो कुछ मराठी अथवा राजपूत मूल का मानते हैं। ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार, इस वंश की स्थापना **दंतिदुर्ग (735 ई.)** ने की थी। उसने चालुक्य शासक **कृतिवर्मा द्वितीय** को पराजित कर स्वतंत्र राज्य की नींव रखी। राष्ट्रकूटों की राजधानी प्रारंभ में **एलोरा (रशत्रकूट)** थी, बाद में उन्होंने **मन्यखेत (वर्तमान मलखेड, कर्नाटक)** को राजधानी बनाया।

◆ प्रमुख शासक एवं उनकी उपलब्धियाँ

1. **दंतिदुर्ग (735-756 ई.)** –

इसने वंश की स्थापना कर विभिन्न दक्षिणी राजाओं को पराजित किया और संपूर्ण दक्कन पर अपना अधिकार स्थापित किया।

2. **कृष्ण I (756-773 ई.)** –

यह कला-प्रेमी शासक था। उसके शासनकाल में प्रसिद्ध **कैलासनाथ मंदिर (एलोरा)** का निर्माण हुआ, जो एक ही चट्टान को काटकर बनाया गया अद्भुत शिल्प है।

3. **ध्रुव धर्ममहारा (780-793 ई.)** –

इसने उत्तर भारत के कई राजाओं को हराकर राष्ट्रकूट साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार किया।

4. **गोविंद III (793–814 ई.)** –

राष्ट्रकूट वंश का सबसे वीर और सफल शासक माना जाता है। उसने उत्तर में गंगा-यमुना क्षेत्र तक और दक्षिण में कांचीपुरम तक अपना प्रभुत्व स्थापित किया।

5. **अमोघवर्ष I (814–880 ई.)** –

यह शांति-प्रिय और धर्मनिष्ठ शासक था। उसने कन्नड़ साहित्य को बढ़ावा दिया और स्वयं 'कवि राजमार्ग' नामक ग्रंथ की रचना की। अमोघवर्ष के काल में कला, साहित्य और धर्म का अद्भुत विकास हुआ।

6. **कृष्ण III (939–967 ई.)** –

इसने चोलों और पांड्यों को पराजित कर दक्षिण भारत में राष्ट्रकूट साम्राज्य की प्रतिष्ठा को चरम सीमा तक पहुँचाया।

◆ प्रशासन एवं संस्कृति

राष्ट्रकूटों का प्रशासन अत्यंत संगठित था। राज्य को 'राष्ट्र', 'विषय', 'ग्राम' आदि इकाइयों में बाँटा गया था। प्रत्येक स्तर पर अधिकारी नियुक्त थे। शासन विकेन्द्रीकृत था, जिससे स्थानीय स्वशासन को बढ़ावा मिला।

धार्मिक दृष्टि से राष्ट्रकूट अत्यंत सहिष्णु थे। उन्होंने **हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्मों** को समान संरक्षण दिया। अमोघवर्ष स्वयं जैन धर्म के अनुयायी थे, जबकि कृष्ण I ने शिव मंदिरों का निर्माण कराया।

◆ कला और स्थापत्य

राष्ट्रकूट काल की कला दक्षिण भारत की स्थापत्य परंपरा की उत्कृष्ट मिसाल है। **एलोरा का कैलासनाथ मंदिर, एलिफेंटा की गुफाएँ**, तथा कई जैन मंदिर राष्ट्रकूट काल की कलात्मक श्रेष्ठता को दर्शाते हैं।

◆ पतन

10वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राष्ट्रकूट साम्राज्य आंतरिक कलह और बाहरी आक्रमणों के कारण दुर्बल होने लगा। अंततः **पश्चिमी चालुक्यों** ने इन्हें पराजित कर सत्ता अपने हाथ में ले ली।

◆ निष्कर्ष

राष्ट्रकूट वंश ने भारतीय इतिहास में राजनीतिक एकता, धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक विकास का स्वर्ण युग स्थापित किया। उनके शासनकाल में दक्षिण भारत कला, साहित्य और स्थापत्य की दृष्टि से समृद्ध हुआ। राष्ट्रकूटों की उपलब्धियाँ आज भी भारतीय सांस्कृतिक गौरव का अभिन्न अंग हैं।